

राष्ट्रीय

समहार



कानपुर • सोमवार • 18 मार्च • 2024

कमल नाल से रेशे निकालने के यंत्र पर सीएसए को मिला पेटेंट

हारा न्यूज ब्यूरो
पुर।

के तने (नाल) से फाइबर
ण हेतु एक नवीन यंत्र और
विधि के शोध विषय पर भारत
र से सीएसए विवि को मिला
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं
की विश्वविद्यालय कानपुर
विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र
रिधान विभाग की असिस्टेंट
र रितु पांडेय को भारत सरकार
ट कार्यालय द्वारा उनके शोध
ट प्रमाण पत्र मिला है।

डॉ.पांडेय ने बताया कि कमल
से फाइबर निष्कर्षण हेतु एक
उपकरण और उसकी विधि
पर नवीन शोध किया है।
बताया कि कमल के सम्पूर्ण

की उपयोगिता सर्वविदित है। इसके
बीज,पंखुड़ी, पत्ती, जड़ तथा डंठल
में है। उन्होंने बताया कि किसान अब
की खेती करके इसके तने से रेशे
कर अपनी आय बढ़ा सकते हैं।
बताया कि कमल से रेशे निकालने की



पेटेंट प्रमाण पत्र के साथ डॉ. रितु पांडे।

फोटो : एसएनबी

■ विवि की असिस्टेंट प्रोफेसर के शोध को
भारत सरकार ने दिया पेटेंट प्रमाण पत्र

पारंपरिक प्रक्रिया हाथों द्वारा ही सम्पन्न की
जाती है। इसमें कमल के तने को छोटे छोटे
भागों में तोड़ा जाता है तथा टूटे हुए तने को
मरोड़कर रेशा निकाला जाता है परंतु एक नए
यंत्र द्वारा कमल के रेशे निकालने की प्रक्रिया
को सरलीकरण किया गया है।

डॉ. रितु पांडे द्वारा कमल के
रेशे निकालने के लिए नये यंत्र का
निर्माण किया गया है। उन्होंने बताया
कि नए यंत्र द्वारा एक बार में एक
दर्जन रेशे निकाले जा सकते हैं। इस
प्रक्रिया में हाथों में कमल के कांटे
भी नहीं लगते। रेशे को लोटेस
सिल्क भी कहते हैं। कमल रेशों का
उपयोग वस्त्र बनाने में होता है तथा
इन वस्त्रों की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय
वाजार में अधिक है। धागा निकालने
तथा कपड़ा बनाने की प्रक्रिया
केमिकल से रहित है इसलिए इसका
प्रयोग खाद्य पदार्थों की पैकिंग में भी
किया जा सकता है।

वर्तमान में कमल रेशे निकालने
का कार्य भारत, वर्मा, म्यांमार, तथा
कंबोडिया में होता है। लोटेस सिल्क
वस्त्रों की डिमांड यूरोपीय देशों में
ज्यादा है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी
डॉ. खलील खान ने बताया कि कुलपति
डॉ.आनंद कुमार सिंह तथा डीन कम्युनिटी
साइंस डॉ.मुक्ता गर्ग ने डॉ.रितु पांडे की
उपलब्धि की सराहना कर उन्हें शुभकामनाएं
दीं हैं।

गेट परीक्षा में सफल हुए कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज के पांच छात्र



गेट परीक्षा में सफल हुए छात्र

। फोटो : एसएनबी

कानपुर (एसएनबी)। चंद्रशेखर आजाद
कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर
के इंजीनियरिंग महाविद्यालय के पांच छात्रों ने
गेट परीक्षा 2024 में सफलता पाई है।

देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश के
लिए आयोजित होने वाली अहर्ता परीक्षा
ग्रेजुएट एंटीथ्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट

2024) का परिणाम शनिवार
देर शाम जारी हुआ, जिसमें
चंद्रशेखर आजाद कृषि
विश्वविद्यालय द्वारा संचालित
कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय
के पांच होनहार छात्रों ने अपनी-
अपनी सफलता का परचम
लहराया है।

यह जानकारी देते हुए
मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील
खान ने बताया कि पांचों छात्र
आर्यन दुवे, ऋषि सचान,
अंकित कुमार, कार्तिक सचान

एवम नवनीत सिंह कृषि अभियंत्रण
महाविद्यालय के ही छात्र हैं। उन्होंने कहा कि
जल्द ही महाविद्यालय परिवार द्वारा इन सभी
छात्रों का सम्मान समारोह भी आयोजित
किया जाएगा। कुलपति डा.आनंद कुमार सिंह
ने छात्रों की सफलता पर उन्हें व अधिष्ठाता
डॉ.एनके शर्मा को बधाई दी है।

कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु भारत सरकार से सीएसए को मिला पेटेंट

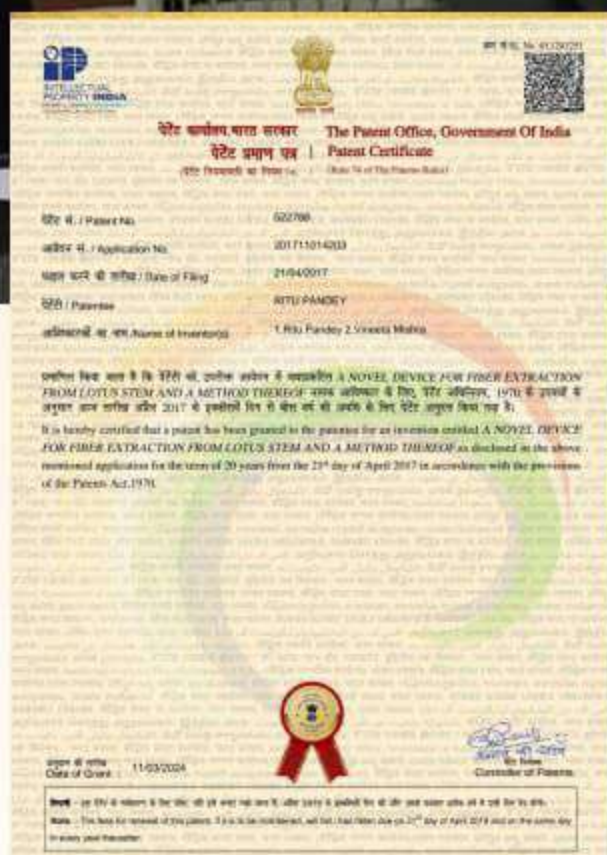
डीटीएनएन | कानपुर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर रितु पांडेय को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा उनके शोध को पेटेंट प्रमाण पत्र मिला है। डॉक्टर पांडेय ने बताया कि कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु एक नवीन उपकरण और उसकी विधि विषयक पर नवीन शोध किया है। उन्होंने बताया कि कमल के सम्पूर्ण भाग की उपयोगिता सर्वविदित है! इसके केसर, बीज, पंखुड़ी, पत्ती, जड़ तथा डंठल उपयोगी है। उन्होंने बताया कि किसान अब कमल की खेती करके इसके तने से रेशे निकालकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बताया कि कमल से रेशे निकालने की पारंपरिक प्रक्रिया हाथों द्वारा ही सम्पन्न की जाती है। इसमें कमल के तने को छोटे छोटे भागों में तोड़ा जाता है तथा टूटे हुए तने को मरोड़कर रेशा निकाला जाता है। परंतु एक नए यन्त्र द्वारा कमल के रेशे निकालने की प्रक्रिया को सरलीकरण किया गया है।

डॉक्टर रितु पांडेय द्वारा कमल रेशे निकालने के लिए नये यंत्र का निर्माण किया गया है। उन्होंने बताया कि नए यंत्र द्वारा एक बार में एक दर्जन रेशे निकाले जा सकते हैं तथा इस प्रक्रिया में हाथों में कमल के काटे भी नहीं लगते। रेशे को लौटस सिल्क भी कहते हैं कमल रेशो का उपयोग वस्त्र बनाने में होता है तथा इन वस्त्रों की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुँच अधिक है। धागा निकालने तथा कपड़ा बनाने की प्रक्रिया कैमिकल से रहित है इसलिए इसका प्रयोग खाद्य पदार्थों की पैकिंग में भी किया जा सकता है।



वर्तमान में कमल रेशे निकालने का कार्य भारत, बर्मा, म्यांमार, तथा कंबोडिया में होता है। लोटस सिल्क वस्त्रों की डिमांड यूरोपीय देशों में ज़्यादा है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह तथा डीन कम्युनिटी साइंस डॉक्टर मुक्ता गर्ग ने इस अवसर पर डॉक्टर रितु पांडेय की सराहना की एवं उन्हें शुभकामनाएं प्रदान की है।



असिस्टेंट
प्रोफेसर
डॉक्टर रितु
पांडेय के
शोध को
मिला पेटेंट

भारत सरकार से सीएसए को मिला पेटेंट



बार में एक दर्जन रेशे निकाले जा सकते हैं तथा इस प्रक्रिया में हाथों में कमल के काटे भी नहीं लगते। रेशे को लौटस सिल्क भी कहते हैं कमल रेशो का उपयोग वस्त्र बनाने में होता है तथा इन वस्त्रों की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुँच अधिक है। धागा निकालने तथा कपड़ा बनाने की प्रक्रिया कैमिकल से रहित है इसलिए इसका प्रयोग खाद्य पदार्थों की पैकिंग में भी किया जा सकता है। वर्तमान में कमल रेशे निकालने का कार्य भारत, बर्मा, म्यांमार, तथा कंबोडिया में होता है। लोटस सिल्क वस्त्रों की डिमांड यूरोपीय देशों में ज्यादा है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह तथा डीन कम्युनिटी साइंस डॉक्टर मुक्ता गर्ग ने इस अवसर पर डॉक्टर रितु पांडे की सराहना की एवं उन्हें शुभकामनाएं प्रदान की है।

आज का कानपुर

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर रितु पांडेय को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा उनके शोध को पेटेंट प्रमाण पत्र मिला है। डॉक्टर पांडेय ने बताया कि कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु एक नवीन उपकरण और उसकी विधि विषयक पर नवीन शोध किया है। उन्होंने बताया कि कमल के

सम्पूर्ण भाग की उपयोगिता सर्वविदित है! इसके केसर, बीज, पंखुड़ी, पत्ती, जड़ तथा डंठल उपयोगी है। उन्होंने बताया कि किसान अब कमल की खेती करके इसके तने से रेशे निकालकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बताया कि कमल से रेशे निकालने की पारंपरिक प्रक्रिया हाथों द्वारा ही सम्पन्न की जाती है। इसमें कमल के तने को छोटे छोटे भागों में तोड़ा जाता है तथा टूटे हुए तने को मरोड़कर रेशा निकाला जाता है। परंतु एक नए यन्त्र द्वारा कमल के रेशे

निकालने की प्रक्रिया को सरलीकरण किया गया है। डॉक्टर रितु पांडेय द्वारा कमल रेशे निकालने के लिए नये यंत्र का निर्माण किया गया है। उन्होंने बताया कि नए यन्त्र द्वारा एक

कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच छात्र गेट परीक्षा में हुए सफल



कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु एक नवीन उपकरण की विधि के शोध विषय पर भारत सरकार से सीएसए को मिला पेटेंट

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर रितु पांडेय को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा उनके शोध को पेटेंट प्रमाण पत्र मिला है। डॉक्टर पांडेय ने बताया कि कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु एक नवीन उपकरण और उसकी विधि विषयक पर नवीन शोध किया है। उन्होंने बताया कि कमल के सम्पूर्ण भाग की उपयोगिता सर्वविदित है! इसके केसर, बीज, पंखुड़ी, पत्ती, जड़ तथा डंठल उपयोगी है। उन्होंने बताया कि किसान अब कमल की खेती करके इसके तने से रेशे निकालकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बताया कि कमल से रेशे निकालने की पारंपरिक प्रक्रिया हाथों द्वारा ही सम्पन्न की जाती है। इसमें कमल के तने को छोटे छोटे भागों में तोड़ा जाता है तथा टूटे हुए तने को मरोड़कर रेशा निकाला जाता है। परंतु एक नए यन्त्र द्वारा



कमल के रेशे निकालने की प्रक्रिया को सरलीकरण किया गया है। डॉक्टर रितु पांडे द्वारा कमल रेशे निकालने के लिए नये यंत्र का निर्माण किया गया है। उन्होंने बताया कि नए यन्त्र द्वारा एक बार में एक दर्जन रेशे निकाले जा सकते हैं तथा इस प्रक्रिया में हाथों में कमल के काटे भी नहीं लगते। रेशे को लौटस सिल्क भी कहते हैं कमल रेशो का उपयोग वस्त्र बनाने में होता है तथा इन वस्त्रों की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुँच अधिक है। धागा निकालने तथा कपड़ा बनाने की प्रक्रिया

कैमिकल से रहित है। इसलिए इसका प्रयोग खाद्य पदार्थों की पैकिंग में भी किया जा सकता है। वर्तमान में कमल रेशे निकालने का कार्य भारत, बर्मा, म्यांमार, तथा कंबोडिया में होता है। लोटस सिल्क वस्त्रों की डिमांड यूरोपीय देशों में ज़्यादा है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह तथा डीन कम्युनिटी साइंस डॉक्टर मुक्ता गर्ग ने इस अवसर पर डॉक्टर रितु पांडे की सराहना की एवं उन्हें शुभकामनाएं प्रदान की है।

कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच छात्र गेट परीक्षा में हुए सफल

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की इंजीनियरिंग महाविद्यालय के छात्रों ने गेट परीक्षा 2024 में सफलता पाई है। देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश के लिए आयोजित होने वाली अहर्ता परीक्षा ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग गेट 2024 का परिणाम शनिवार देर शाम जारी हुआ। जिसमें चन्द्र शेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के द्वारा संचालित कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच होनहार छात्रों ने अपनी अपनी सफलता का परचम लहराया है। यह जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि पांचों छात्र आर्यन दुबे, ऋषि सचान, अंकित कुमार, कार्तिकेय सचान एवम नवनीत सिंह कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के ही छात्र हैं। उन्होंने कहा कि जल्द ही महाविद्यालय परिवार द्वारा इन सभी छात्रों का सम्मान समारोह भी आयोजित किया जाएगा। इसी क्रम



में कुलपति चन्द्र शेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय डॉ आनंद कुमार सिंह ने भी इन छात्रों की सफलता पर अधिष्ठाता डॉ एन के शर्मा को शुभकामनाएं देते हुए अपने बधाई संदेश में कहा कि हमें उम्मीद है कि एक भविष्य के विकसित भारत के निर्माण में हमारे ये प्रतिभाशाली छात्र आगामी भविष्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका

का निर्वाहन भी अवश्य ही करेंगे। डॉ एन के शर्मा ने भी जनपदवासियों से अपील करते हुए कहा कि जनपद इटावा के आस पास के अभिभावकगण अपने अपने पाल्यों का इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए इस महाविद्यालय का चयन अवश्य करें। नए सत्र में प्रवेश के लिए अब ऑनलाइन फॉर्म भी प्रारंभ हो चुके हैं।

राष्ट्रीय स्वरूप

कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच छात्र गेट परीक्षा में हुए सफल

कानपुर । सीएसए की इंजीनियरिंग महाविद्यालय के छात्रों ने गेट परीक्षा 2024 में सफलता पाई है। देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश के लिए आयोजित होने वाली अहर्ता परीक्षा ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट 2024) का परिणाम शनिवार देर शाम जारी हुआ। जिसमें चन्द्र शेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के द्वारा संचालित कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच होनहार छात्रों ने अपनी अपनी सफलता का परचम लहराया है। यह जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि पांचों छात्र आर्यन दुबे, ऋषि सचान, अंकित कुमार, कार्तिकेय सचान एवम नवनीत सिंह कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के ही छात्र हैं। उन्होंने कहा कि, जल्द ही महाविद्यालय परिवार द्वारा इन सभी छात्रों का सम्मान समारोह भी आयोजित किया जाएगा। इसी क्रम में कुलपति चन्द्र शेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय डॉ आनंद कुमार सिंह ने भी इन छात्रों की सफलता

पर अधिष्ठाता डॉ एन के शर्मा को जनपदवासियों से अपील करते हुए कहा



शुभकामनाएं देते हुए अपने बधाई संदेश में कहा कि, हमें उम्मीद है कि एक भविष्य के विकसित भारत के निर्माण में हमारे ये प्रतिभाशाली छात्र आगामी भविष्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन भी अवश्य ही करेंगे। डॉ एन के शर्मा ने भी

कि, जनपद इटावा के आस पास के अभिभावकगण अपने अपने पाल्यों का इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए इस महाविद्यालय का चयन अवश्य करें। नए सत्र में प्रवेश के लिए अब ऑनलाइन फॉर्म भी प्रारंभ हो चुके हैं।



जन एक्सप्रेस

कमल की खेती कर तने से रेशे निकाल किसान बढ़ा सकते हैं आमदनी

जन एक्सप्रेस | कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ.रितु पांडेय के शोध को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रमाण पत्र मिला है। उन्हें यह पेटेंट प्रमाण पत्र कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण के लिए एक नवीन उपकरण और उसकी विधि विषयक पर नवीन शोध करने के लिए दिया गया है। डॉ.पांडे ने बताया कि कमल के केसर, बीज, पंखुड़ी, पत्ती, जड़ तथा डंठल उपयोगी है। किसान अब कमल की खेती कर इसके तने से रेशे निकालकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बताया कि कमल से रेशे निकालने की पारंपरिक प्रक्रिया हाथों द्वारा ही सम्पन्न की जाती है। इसमें कमल के तने को छोटे छोटे भागों में तोड़ा जाता है तथा टूटे हुए तने को मरोड़कर रेशा निकाला जाता है परंतु एक नए यंत्र द्वारा कमल के रेशे निकालने की प्रक्रिया को सरलीकरण किया गया है। डॉ.रितु पांडे द्वारा कमल रेशे निकालने के लिए नये यंत्र का निर्माण किया गया है। उन्होंने बताया



कि नए यंत्र द्वारा एक बार में एक दर्जन रेशे निकाले जा सकते हैं तथा इस प्रक्रिया में हाथों में कमल के काटे भी नहीं लगते। रेशे को लौटस सिल्क भी कहते हैं कमल रेशो का उपयोग वस्त्र बनाने में होता है तथा इन वस्त्रों की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुँच अधिक है। धागा निकालने तथा कपड़ा बनाने की प्रक्रिया कैमिकल से रहित है। इसलिए इसका प्रयोग खाद्य पदार्थों की पैकिंग में भी किया जा सकता है। वर्तमान में कमल रेशे निकालने का कार्य भारत, बर्मा, म्यांमार, तथा कंबोडिया में होता है। लोटस सिल्क वस्त्रों की डिमांड यूरोपीय देशों में ज़्यादा है। विश्वविद्यालय के डॉ.खलील खान ने बताया कि कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह तथा डीन कम्युनिटी साइंस डॉ. मुक्ता गर्ग ने इस अवसर पर डॉ.रितु पांडे को शुभकामनाएं दी।

खानहर में खाना खाने बाद सीने में दर्द हुआ और तबीयत बिगड़ी।

करने के लिए विशेष प्रचार वाहन भी रैली में शामिल किए गए। रैली में डॉक्टर

सुधार कुमार, विशिष्ट अतिथि श्रेयांश कपूर, डॉ. जोगेंद्र सिंह, डॉ. संजय सिंघवी, डॉ. कुनाल सहाय व अन्य थे।

एससीईआरटी सरिता तिवारी, डायट प्राचार्य राजेश वर्मा मास्टर ट्रेनर शेखर यादव, पवन पटेल, गौरव आदि रहे।

नवाचार

कमल के तने से लोटस फाइबर ड्राइंग मशीन निकालेगी रेशा, सीएसए कि वैज्ञानिक कोमिला पेटेंट

ड्राइंग मशीन से अब जख्मी नहीं होंगे हाथ

कानपुर, प्रमुख संवाददाता। कमल के तने से अब रेशे निकालने में हाथ जख्मी नहीं होंगे और न ही अधिक समय की बर्बादी होगी। क्योंकि, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) की वैज्ञानिक डॉ. रितु पांडेय ने एक नई मशीन विकसित की है। इसका नाम लोटस फाइबर ड्राइंग मशीन रखा गया है। भारत सरकार ने इस मशीन की तकनीक का पेटेंट प्रदान कर दिया है।

विवि की वैज्ञानिक डॉ. रितु पांडेय



ने बताया कि कमल के फूल से लेकर सभी भागों की उपयोगिता है। इसके केसर, बीच पंखुड़ी, पुत्ती,

जड़ व डंठल का भी उपयोग होता है इसलिए किसान अब कमल की खेती कर इसके तने से रेशे

निकालकर अपनी आय को बढ़ा रहे हैं। कमल रेशो का उपयोग वस्त्र बनाने में होता है।

६६ विवि के वैज्ञानिक किसानों की आय बढ़ाने व समस्याओं का समाधान खोजने के लिए तकनीक विकसित कर रहे हैं। डॉ. रितु पांडेय ने एक मशीन विकसित की है, जिसका पेटेंट भी मिल गया है। - डॉ. आनंद कुमार सिंह, निदेशक-सीएसए विवि

सीएसए वीसी के साथ डॉ. रितु पांडेय।

हिंदुस्तान 18/03/2024

कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु एक नवीन उपकरण और उसकी विधि के शोध विषय पर भारत सरकार से सीएसए को मिला पेटेंट



डंठल उपयोगी है। उन्होंने बताया कि किसान अब कमल की खेती करके इसके तने से रेशे निकालकर अपनी आय बढ़ सकते हैं। उन्होंने बताया कि

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर रितु पांडेय को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा उनके शोध को पेटेंट प्रमाण पत्र मिला है। डॉक्टर पांडेय ने बताया कि कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु एक नवीन उपकरण और उसकी विधि विषयक पर नवीन शोध किया है। उन्होंने बताया कि कमल के सम्पूर्ण भाग की उपयोगिता सर्वविदित है! इसके केसर, बीज, पंखुड़ी, पत्ती, जड़ तथा

कमल से रेशे निकालने की पारंपरिक प्रक्रिया हाथों द्वारा ही सम्पन्न की जाती है। इसमें कमल के तने को छोटे छोटे भागों में तोड़ा जाता है तथा टूटे हुए तने को मरोड़कर रेशा निकाला जाता है। परंतु एक नए यन्त्र द्वारा कमल के रेशे निकालने की प्रक्रिया को सरलीकरण किया गया है। डॉक्टर रितु पांडे द्वारा कमल रेशे निकालने के लिए नये यंत्र का निर्माण किया गया है। उन्होंने बताया कि नए यन्त्र द्वारा एक बार में एक दर्जन रेशे निकाले जा सकते हैं तथा इस प्रक्रिया में

हाथों में कमल के काटे भी नहीं लगते। रेशे को लौटस सिल्क भी कहते हैं कमल रेशो का उपयोग वस्त्र बनाने में होता है तथा इन वस्त्रों की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुँच अधिक है। धागा निकालने तथा कपड़ा बनाने की प्रक्रिया कैमिकल से रहित है इसलिए इसका प्रयोग खाद्य पदार्थों की पैकिंग में भी किया जा सकता है। वर्तमान में कमल रेशे निकालने का कार्य भारत, बर्मा, म्यांमार, तथा कंबोडिया में होता है। लोटस सिल्क वस्त्रों की डिमांड यूरोपीय देशों में ज़्यादा है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह तथा डीन कम्युनिटी साइंस डॉक्टर मुक्ता गर्ग ने इस अवसर पर डॉक्टर रितु पांडे की सराहना की एवं उन्हें शुभकामनाएं प्रदान की है।

राष्ट्रीय

सहारा



कानपुर • सोमवार • 18 मार्च • 2024

गेट परीक्षा में सफल हुए कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज के पांच छात्र



गेट परीक्षा में सफल हुए छात्र

। फोटो : एसएनबी

2024) का परिणाम शनिवार देर शाम जारी हुआ, जिसमें चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच होनहार छात्रों ने अपनी-अपनी सफलता का परचम लहराया है।

यह जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि पांचों छात्र आर्यन दुवे, ऋषि सचान, अंकित कुमार, कार्तिकेय सचान

कानपुर (एसएनबी)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के इंजीनियरिंग महाविद्यालय के पांच छात्रों ने गेट परीक्षा 2024 में सफलता पाई है।

देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश के लिए आयोजित होने वाली अहर्ता परीक्षा ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट

एवम नवनीत सिंह कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के ही छात्र हैं। उन्होंने कहा कि जल्द ही महाविद्यालय परिवार द्वारा इन सभी छात्रों का सम्मान समारोह भी आयोजित किया जाएगा। कुलपति डा.आनंद कुमार सिंह ने छात्रों की सफलता पर उन्हें व अधिष्ठाता डॉ.एनके शर्मा को बधाई दी है।

कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच छात्र गेट परीक्षा में सफल

कानपुर, 17 मार्च। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर की इंजीनियरिंग महाविद्यालय के छात्रों ने गेट परीक्षा 2024 में सफलता पाई है। देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश के लिए आयोजित होने वाली अहर्ता परीक्षा ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट 2024) का परिणाम शनिवार देर शाम जारी हुआ, जिसमें सीएसए के कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच होनहार छात्रों ने अपनी अपनी सफलता का परचम लहराया है। यह जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि पांचों छात्र आर्यन दुबे, ऋषि सचान, अंकित कुमार, कार्तिकेय सचान एवम नवनीत सिंह कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के ही छात्र हैं। उन्होंने कहा कि, जल्द ही महाविद्यालय परिवार द्वारा इन सभी छात्रों का सम्मान समारोह भी आयोजित किया जाएगा।

अब मशीन से निकल सकेंगे कमल के तने के रेशे, नहीं लगेंगे कांटे

सीएसए की वैज्ञानिक डॉ. रितु पांडे की लोटस फाइबर ड्राइंग मशीन हुई पेटेंट

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। अब कमल के तने से रेशे निकालने में कांटे नहीं लगेंगे। साथ ही समय की भी बचत होगी। ऐसा संभव होगा चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि की असिस्टेंट प्रोफेसर रितु पांडे की मशीन से। उनकी इस लोटस फाइबर ड्राइंग मशीन का केंद्र सरकार ने पेटेंट कर दिया है।

कमल के संपूर्ण भाग की उपयोगिता है। इसके केसर, पंखुड़ी, पत्ती, जड़ तथा डंठल उपयोगी है। किसान अब कमल की खेती करके इसके तने से रेशे निकालकर अपनी इनकम बढ़ा सकते हैं। कमल रेशों का उपयोग वस्त्र बनाने में होता है तथा



सीएसए कुलपति को पेटेंट प्रमाण पत्र दिखातीं डॉ. रितु। संवाद

इन वस्त्रों की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में अधिक है। वर्तमान में कमल रेशे निकालने का कार्य भारत, बर्मा, म्यांमार तथा कंबोडिया में होता है।

कमल से रेशे निकालने की पारंपरिक प्रक्रिया में हाथों से तनों के रेशे निकाले जाते हैं। इसमें कमल के तने को छोटे-छोटे भागों में तोड़ा जाता है, फिर टूटे हुए तने को मरोड़कर रेशे निकाले जाते हैं। रेशे निकालने में कई बार हाथों में कांटे लगते हैं, साथ ही काफी लंबा समय लगता है। इस मशीन से कमल रेशे निकालने की प्रक्रिया आसानी से हो सकेगी।

डॉ. रितु पांडे ने बताया कि इस यंत्र की मदद से एक बार में एक दर्जन रेशे निकाले जा सकते हैं। लोटस सिल्क वस्त्रों की डिमांड यूरोपीय देशों में ज्यादा है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर एके सिंह ने डॉ. रितु की सराहना की।

राष्ट्रीय स्वरूप

कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण के लिए एक नवीन उपकरण और उसकी विधि विषयक पर किया शोध

कानपुर । सीएसए के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर रितु पांडेय को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा उनके शोध को पेटेंट प्रमाण पत्र मिला है। डॉक्टर पांडेय ने बताया कि कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु एक नवीन उपकरण और उसकी विधि विषयक पर नवीन शोध किया है। उन्होंने बताया कि कमल के सम्पूर्ण भाग की उपयोगिता सर्वविदित है! इसके केसर, बीज, पंखुड़ी, पत्ती, जड़ तथा डंठल उपयोगी है। उन्होंने बताया कि किसान अब कमल की खेती करके इसके तने से रेशे निकालकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बताया कि कमल से रेशे निकालने की पारंपरिक प्रक्रिया हाथों द्वारा ही सम्पन्न की जाती है।

इसमें कमल के तने को छोटे छोटे भागों में

यंत्र का निर्माण किया गया है। उन्होंने



तोड़ा जाता है तथा टूटे हुए तने को मरोड़कर रेशा निकाला जाता है। परंतु एक नए यंत्र द्वारा कमल के रेशे निकालने की प्रक्रिया को सरलीकरण किया गया है। डॉक्टर रितु पांडे द्वारा कमल रेशे निकालने के लिए नये

बताया कि नए यंत्र द्वारा एक बार में एक दर्जन रेशे निकाले जा सकते हैं तथा इस प्रक्रिया में हाथों में कमल के काटे भी नहीं लगते। रेशे को लौटस सिल्क भी कहते हैं कमल रेशो का उपयोग वस्त्र बनाने में होता है विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी

डॉक्टर खलील खान ने बताया कि कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह तथा डीन कम्युनिटी साइंस डॉक्टर मुक्ता गर्ग ने इस अवसर पर डॉक्टर रितु पांडे की सराहना की एवं उन्हें शुभकामनाएं प्रदान की है।

कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच छात्र गेट परीक्षा में हुए सफल



आज का कानपुर

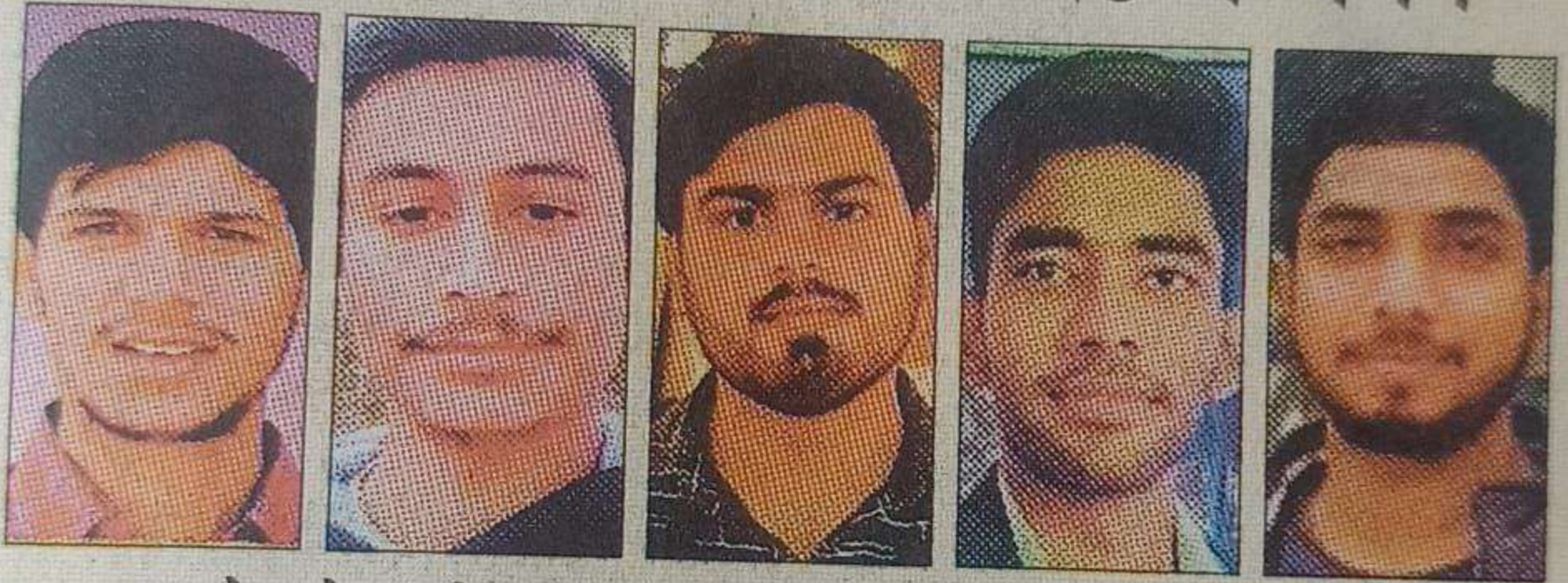
कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर की इंजीनियरिंग महाविद्यालय के छात्रों ने गेट परीक्षा 2024 में सफलता पाई है। देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश के लिए आयोजित होने वाली अहर्ता परीक्षा ग्रेजुएट एंटीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट 2024) का परिणाम शनिवार देर शाम जारी हुआ। जिसमें चन्द्र शेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के द्वारा संचालित कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच होनहार छात्रों ने अपनी अपनी सफलता

का परचम लहराया है। यह जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि पांचों छात्र आर्यन दुबे, ऋषि सचान, अंकित कुमार, कार्तिकेय सचान एवम नवनीत सिंह कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के ही छात्र हैं। उन्होंने कहा कि, जल्द ही महाविद्यालय परिवार द्वारा इन सभी छात्रों का सम्मान समारोह भी आयोजित किया जाएगा। इसी क्रम में कुलपति चन्द्र शेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय डॉ आनंद कुमार सिंह ने भी इन छात्रों की सफलता पर अधिष्ठाता डॉ एन के शर्मा को शुभकामनाएं देते

हुए अपने बधाई संदेश में कहा कि, हमें उम्मीद है कि एक भविष्य के विकसित भारत के निर्माण में हमारे ये प्रतिभाशाली छात्र आगामी भविष्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन भी अवश्य ही करेंगे। डॉ एन के शर्मा ने भी जनपद वासियों से अपील करते हुए कहा कि, जनपद इटावा के आस पास के अभिभावकगण अपने अपने पाल्यों का इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए इस महाविद्यालय का चयन अवश्य करें। नए सत्र में प्रवेश के लिए अब ऑनलाइन फॉर्म भी प्रारंभ हो चुके हैं।

अमर उजाला 18/03/2024

सीएसए के पांच छात्रों का गेट में चयन



कानपुर। देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश के लिए आयोजित ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट 2024) में चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग महाविद्यालय के पांच छात्रों ने सफलता पाई है। कृषि इंजीनियरिंग महाविद्यालय के आर्यन दुबे, ऋषि सचान, अंकित कुमार, कार्तिकेय सचान एवं नवनीत सिंह का चयन हुआ है। छात्रों की सफलता पर कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह और अधिष्ठाता डॉ. एन के शर्मा ने शुभकामनाएं दीं। (ब्यूरो)



विश्ववार्ता



ई-पत्र पढ़ने के लिए क्विक स्कैन करें

मूल्य
₹4

नगर संस्करण **

सच्ची खबर, पैनी नज़र

150 में बिक रहा 100 वाला स्टाम्प

2

चुनाव तारीखों का ऐलान, राजनीतिक...

6

लाभार्थी वर्ग के बूते 80 का गिफ्ट देंगे... 12

कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच छात्र गेट में हुए सफल

विश्ववार्ता संवाददाता

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर की इंजीनियरिंग महाविद्यालय के पांच छात्रों ने गेट परीक्षा 2024 में सफलता पाई है। यह जानकारी रविवार को विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ.खलील खान ने दी।

उन्होंने बताया कि देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश के लिए आयोजित होने वाली अर्हता परीक्षा ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट 2024) का परिणाम शनिवार देर शाम जारी हुआ। जिसमें चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के द्वारा संचालित कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच होनहार छात्रों ने अपनी अपनी सफलता का परचम लहराया है। श्री खान ने बताया कि पांचों छात्र आर्यन दुबे, ऋषि सचान, अंकित कुमार, कार्तिकेय सचान एवम नवनीत सिंह कृषि अभियंत्रण

महाविद्यालय के ही छात्र है। उन्होंने कहा कि जल्द ही महाविद्यालय परिवार द्वारा इन सभी छात्रों का सम्मान समारोह भी आयोजित किया जाएगा।

इसी क्रम में कुलपति चन्द्र शेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय डॉ आनंद कुमार सिंह ने भी इन छात्रों की सफलता पर अधिष्ठाता डॉ एन के शर्मा को बधाई देते हुए कहा कि, हमें उम्मीद है कि एक भविष्य के विकसित भारत के निर्माण में हमारे ये प्रतिभाशाली छात्र आगामी भविष्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह भी अवश्य ही करेंगे। डॉ एन के शर्मा ने भी जनपद वासियों से अपील करते हुए कहा कि, जनपद इटावा के आस पास के अभिभावक अपने अपने पाल्यों का इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए इस महाविद्यालय का चयन अवश्य करें। नए सत्र में प्रवेश के लिए अब ऑनलाइन फॉर्म भी प्रारंभ हो चुके है।

कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच छात्र गेट परीक्षा में हुए सफल



कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के द्वारा संचालित कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के पांच होनहार छात्रों ने अपनी अपनी सफलता का परचम लहराया है। जानकारी देते हुए मीडिया

कुमार सिंह ने भी इन छात्रों की सफलता पर अधिष्ठाता डॉ एन के शर्मा को शुभकामनाएं देते हुए अपने बधाई संदेश में कहा कि, हमें उम्मीद है कि एक भविष्य के विकसित भारत के निर्माण में हमारे ये प्रतिभाशाली छात्र आगामी भविष्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन भी अवश्य ही करेंगे। डॉ एन के शर्मा ने भी जनपद वासियों से अपील करते हुए कहा कि, जनपद इटावा के आस पास के अभिभावकगण अपने अपने पाल्यों का इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए इस महाविद्यालय का चयन अवश्य करें। नए सत्र में प्रवेश के लिए अब ऑनलाइन फॉर्म भी प्रारंभ हो चुके हैं।

कानपुर नगर, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर की इंजीनियरिंग महाविद्यालय के छात्रों ने गेट परीक्षा 2024 में सफलता पाई है। देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश के लिए आयोजित होने वाली अहर्ता परीक्षा ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट 2024) का परिणाम शनिवार देर शाम जारी हुआ। जिसमें चन्द्र शेखर आजाद

प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि पांचों छात्र आर्यन दुबे, ऋषि सचान, अंकित कुमार, कार्तिकेय सचान एवम नवनीत सिंह कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के ही छात्र हैं। उन्होंने कहा कि, जल्द ही महाविद्यालय परिवार द्वारा इन सभी छात्रों का सम्मान समारोह भी आयोजित किया जाएगा। इसी क्रम में कुलपति चन्द्र शेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय डॉ आनंद

WORLD

खबर ट्वेंस प्रेंस

कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु भारत सरकार से सीएसए को मिला पेटेंट

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर रितु पांडेय को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा उनके शोध को पेटेंट प्रमाण पत्र मिला है। डॉक्टर पांडेय ने बताया कि कमल के तने से फाइबर निष्कर्षण हेतु एक नवीन उपकरण और उसकी विधि विषयक पर नवीन शोध किया है। उन्होंने बताया कि कमल के सम्पूर्ण भाग की उपयोगिता सर्वविदित है! इसके केसर, बीज, पंखुड़ी, पत्ती, जड़ तथा डंठल उपयोगी है। उन्होंने बताया कि किसान अब कमल की खेती करके इसके तने से रेशो निकालकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बताया कि कमल से रेशो निकालने की पारंपरिक प्रक्रिया हाथों द्वारा ही सम्पन्न की जाती है। इसमें कमल के तने को छोटे छोटे भागों में तोड़ा जाता है तथा टूटे हुए तने को मरोड़कर रेशा निकाला जाता है। परंतु एक नए यन्त्र द्वारा कमल के रेशो निकालने की प्रक्रिया को सरलीकरण किया गया है। डॉक्टर रितु पांडेय द्वारा कमल रेशो निकालने के लिए नये यंत्र का निर्माण किया गया है।

उन्होंने बताया कि नए यन्त्र द्वारा एक बार में एक दर्जन रेशो निकाले जा सकते हैं तथा इस प्रक्रिया में हाथों में कमल के काटे भी नहीं



लगते। रेशो को लौटस सिल्क भी कहते हैं कमल रेशो का उपयोग वस्त्र बनाने में होता है तथा इन वस्त्रों की कीमत भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुँच अधिक है। धागा निकालने तथा कपड़ा बनाने की प्रक्रिया कैमिकल से रहित है इसलिए इसका प्रयोग खाद्य पदार्थों की पैकिंग में भी किया जा सकता है। वर्तमान में कमल रेशो निकालने का कार्य भारत, बर्मा, म्यांमार, तथा कंबोडिया में होता है। लोटस सिल्क वस्त्रों की डिमांड यूरोपीय देशों में ज्यादा है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह तथा डीन कम्युनिटी साइंस डॉक्टर मुक्ता गर्ग ने इस अवसर पर डॉक्टर रितु पांडेय की सराहना की एवं उन्हें शुभकामनाएं प्रदान की है।



भारत का सबसे विश्वसनीय न्यूज ऐप
इनस्टॉल करें दैनिक भास्कर और पाएं लोकल न्यूज



दैनिक जागरण आई नेक्स्ट 18/03/2024

अब कम समय में तैयार कर सकते हैं लोटस सिल्क

कमल के तने से प्रदूषण मुक्त तकनीक से निकाले जाएंगे रेशे

kanpur@inext.co.in

KANPUR (17 March): कमल के तने से रेशे निकालने के दौरान अब हाथों में कांटे नहीं लगेंगे. अब कम समय में एक साथ एक दर्जन से अधिक धागों को पाया जा सकता है. जिससे पश्मीना से अधिक कीमती लोटस सिल्क को आसानी से तैयार

कर सकेंगे. सीएसए की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. रितु पांडेय ने कमल के तने से धागा तैयार करने की प्रदूषण मुक्त विधि निकाली है. डॉ. पांडेय की इस तकनीक और उपकरण को भारत सरकार ने पेटेंट प्रदान किया है.

छह साल के बाद पेटेंट

यूरोप में सर्वाधिक मांग वाला लोटस सिल्क कमल के तने से मिलने वाले धागे से तैयार होता है. पश्मीना सिल्क से भी अधिक कीमती इस सिल्क को

तैयार करना सबसे जटिल है. कमल के तने से रेशे निकालकर इसके धागे बनाए जाते हैं, लेकिन रेशे निकालने के दौरान कमल के तने में मौजूद कांटे हाथ को घायल कर देते हैं. डॉ. पांडेय के बनाए उपकरण से एक दर्जन रेशे आसानी से निकाले जाते हैं और हाथ भी घायल नहीं होंगे. असिस्टेंट प्रोफेसर डा. पांडेय ने बताया कि भारत सरकार के पेटेंट आफिस में अप्रैल 2017 में आवेदन किया था. पेटेंट प्रमाण पत्र अब जारी किया गया है.